दीनदयाल शोध संस्थान के तत्त्वावधान में आयोजित ग्रामोदय मेला के उद्घाटन समारोह में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

(दिनांक–24.02.2017, समय–पूर्वाह्न 11:00 बजे, स्थान–चित्रकूट, म॰प्र॰)

दीनदयाल शोध संस्थान के संरक्षक मा॰ मदन दास देवी जी, केन्द्रीय समाज कल्याण मंत्री श्री थावरचंद गहलोत जी, मध्यप्रदेश सरकार के खनिज संसाधन, वाणिज्य, उद्योग एवं नियोजन मंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ला जी, सतना के सांसद श्री गणेश सिंह जी, दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्रजीत सिंह जी, कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्यजन, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों !!

दीनदयाल शोध संस्थान के तत्त्वावधान में आयोजित ''ग्रामोदय मेला'' के उद्घाटन समारोह में उपस्थित होकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। सम्पूर्ण देश महान राष्ट्रवादी नेता एवं प्रखर सामाजिक चिन्तक पं॰ दीनदयाल उपाध्याय जी का 'जन्म शताब्दी वर्ष मना रहा है। इस उपलक्ष्य में शोध संस्थान परिसर में आयोजित इस ग्रामोदय मेले की सार्थकता और प्रासंगिकता काफी बढ़ जाती है। ''एकात्म मानववाद'' के प्रणेता पं॰ दीनदयाल उपाध्याय जी के विचार एवं चिन्तन, समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करते हुए उसे समाज की मुख्य धारा से जोड़ने पर आधारित हैं। दीनदयाल जी ने अंत्योदय के विकास हेतु अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हुए कहा था कि ''आर्थिक योजनाओं तथा प्रगति का माप समाज के ऊपर की सीढ़ी पर पहुँचे व्यक्ति से नहीं, बल्कि सबसे नीचे के स्तर पर विद्यमान व्यक्ति से होगा। X X X X हमारी भावना और सिद्धांत है कि वह मैले–कुचैले, अनपढ़, मूर्ख लोग हमारे नारायण हैं। हमें इनकी पूजा करनी है। यह हमारा सामाजिक एवं मानव धर्म है। जिस दिन इनको पक्के, सुन्दर, स्वच्छ घर बनाकर देंगे, जिस दिन हम इनके बच्चों और स्त्रियों को शिक्षा और जीवन–दर्शन का ज्ञान देंगे, जिस दिन हम इनके हाथ और पाँव की बिवाइयों को भरेंगे और जिस

दिन इनको उद्योगों और धंधों की शिक्षा देकर इनकी आय को ऊँचा उठा देंगे, उस दिन हमारा राष्ट्र के प्रति मातृभाव व्यक्त होगा।''

पं॰ दीनदयाल उपाध्याय जी ने पाश्चात्य दर्शनों पर आधारित विभिन्न सामाजिक और आर्थिक दर्शनों की भारतीय परिवेश में प्रासंगिकता का परीक्षण करते हुए यह पाया था कि साम्यवाद, पूंजीवाद, समाजवाद जैसी अवधारणाएँ भारतीय सन्दर्भों में युगानुकूल नही हैं। अतएव, उन्होंने 'एकात्म मानववाद' का दर्शन प्रतिपादित किया। उनका कहना था कि –''मानव न केवल व्यक्ति है, मानव न केवल समाज है, वरन मानव व्यक्ति और समाज की एकात्मकता में से पैदा होता है। व्यक्ति और समाज को बाँट दें, तो मानव मर जता है। अस्तित्व में ही नहीं आता। व्यक्ति और समाज एक एकात्म इकाई है। इस एकात्म इकाई का नाम ही मानव है और इसलिए मानव को सुखी करना है तो व्यक्तिवादी होकर नहीं कर सकते, क्योंकि व्यक्तिवादी समाज की उपेक्षा करता है। हम मानव को समाजवादी होकर भी सुखी नहीं कर सकते, क्योंकि समाजवाद व्यक्ति के व्यक्तित्व को कुचल देता है।'' वस्तुतः दीनदयाल जी के लिए न तो केवल व्यक्ति का हित सर्वोपरि था और न सिर्फ समाज का –वे दोनों को एकात्मकता प्रदान कर उनको एक–दूसरे का सम्पूरक और पारस्परिक आश्रय मानते थे। दीनदयाल जी दलीय हितों से ऊपर देशहित को मानते थे। उन्होंने कहा था कि ''हमारी राष्ट्रीयता का आधार भारतमाता है, केवल भारत नहीं। माता शब्द हटा दीजिए तो भारत केवल एक भूखंड मात्र रह जाता है।''

मित्रों, हमारी भारतीय संस्कृति में मानव का जीवन–दर्शन पश्चिमी देशों से सर्वथा भिन्न है। हम पाश्चात्य देशों के 'भोगवाद' और 'भौतिकतावाद' के दर्शन का अवलंब ग्रहण नहीं कर सकते। हमारी संस्कृति हमें त्याग, तपस्या, नैतिकता और मर्यादा का पाठ पढ़ाती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमने जो

''भारतीय संविधान'' अपने देश की शासन–व्यवस्था के लिए स्वीकार किया, वह भी हमें सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय अखंडता और एकता, धार्मिक सदाशयता तथा सद्भावना के लिए संकल्पित होने का नियमन प्रदान करता है। हमारी 'धर्मनिरपेक्षता' हमें सभी धर्मों के प्रति समादर की सीख देती है। हमारी राष्ट्रभक्ति में संकुचित भावना और असहिष्णुता की कोई गुंजाइश नहीं है। भारतीय परिवेश में 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' पाश्चात्य देशों या यूरोपीय 'राष्ट्रवाद' के सिद्धांतों से बिल्कुल पृथक् है। भारतीय वाङ्गमय में धरती को माता माना गया है। वैदिक ऋचा है –''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।'' अर्थात् –धरती हमारी माँ है और हम इसके पुत्र हैं। अपने राष्ट्र के भू–खंड के प्रति हमारी यह श्रद्धा और निष्ठा अटूट है, इसीलिए हमारी राष्ट्रीयता का आधार भी सांस्कृतिक और नैतिक है। हमारी संस्कृति ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की अवधारणा में विश्वास रखती है, इसीलिए हमारी राष्ट्रीयता भी संकुचित यूरोपीय राष्ट्रवाद के सिद्धांत से बिल्कुल पृथक् है। हम सबका सुख, सबकी शांति और सबका सौभाग्य चाहनेवाले लोग हैं। ''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया'' –की हमारी मंगलकामना सबके लिए आनंद, उल्लास और निरापद स्थितियों की आकांक्षा रखती है।

दीनदयाल जी का सामाजिक दर्शन अत्यन्त व्यापक था। उनका स्वयं का जीवन भी सादगी, सरलता और संयम का मूर्तिमान रूप था। वे कहते थे कि जो कमाएगा, वो खाएगा –यह ठीक नहीं। जो कमायेगा वह सिर्फ खायेगा ही नहीं, खिलायेगा भी। दरअसल, यह सोच, एक व्यापक, दूरदर्शी और समष्टिवादी तत्व–चिन्तक की ही हो सकती है।

दीनदयाल जी भारतवर्ष के विकास के लिए इसकी आर्थिक उन्नति की जो रूपरेखा बताते हैं, उसमें 'ग्रामोदय' का काफी महत्त्व है। 'भारतमाता ग्रामवासिनी' –हिन्दी के कवि

सुमित्रानन्दन पंत जी ने कहा था। दीनदयाल जी ने भी कहा कि अगर भारत को समृद्ध होना है, प्रगति के पथ पर तेजी से आगे बढ़ना है, तो भारत के गाँवों का विकास अत्यन्त आवश्यक है। यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि दीनदयाल शोध संस्थान, उपाध्याय जी के सपनों के भारत के नवनिर्माण हेतु भारतीय गाँवों के विकास की रूपरेखा तैयार कर रहा है। मुझे बताया गया है कि ग्रामीण विकास से संबंधित केन्द्र की विभिन्न योजनाओं के कार्यान्वयन में संस्थान के सुझावों का बड़ा महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। कृषि के समेकित विकास, जल–संचयन, पशुधन विकास, ग्रामीण क्षेत्रों में कौशल–विकास तथा शिक्षा, स्वास्थ्य एवं समाज कल्याण आदि प्रक्षेत्रों के सम्यक् विकास हेतु इस संस्थान के सुझावों का काफी महत्त्व है। बच्चों में वैज्ञानिक सोच विकसित करते हुए उनका समुचित तकनीकी अभिज्ञान बढ़ाना आज ग्रामीण क्षेत्रों में भी बेहद जरूरी है। संस्थान ने इस दिशा में भी ठोस सुझाव दिए हैं। संस्थान के 'सेल्फ रिलायंस मॉडल' को सम्मानित भी किया गया है तथा इसके ''सोशल आर्किटेक्ट कॉपल्स (Couples)'' कार्यक्रम को फ्लैगशिप प्रोग्राम के रूप में गोंडा, नागपुर एवं चित्रकूट में आजमाया जा रहा है। ग्रामीण विकास की दृष्टि से इस शोध–संस्थान की प्रासंगिकता और महत्ता लगातार बढ़ रही है। राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख और पं॰ दीनदयाल जी उपाध्याय के दर्शन और राष्ट्रीय नव–निर्माण के सपने को साकार करने की दिशा में 'ग्रामोदय मेले' का आयोजन एक सार्थक पहल है। भारत सरकार की 'मनरेगा', NRLM, PMGSY, IAY, Nirmal Gram Abhiyan, IWMP, NRDWP, BGRF आदि योजनाएँ ग्रामीण विकास की दृष्टि से और अधिक कैसे उपयोगी हों, इस लिहाज से संस्थान के शोधार्थियों को सतत् शोध और परीक्षण करते रहने की आवश्यकता है। खेती की पद्धति में सुधार, कृषि–फसलों के मूल्य–निर्धारण, लघु एवं कुटीर उद्योगों तथा कारखानों के प्रसार, विश्व में नये बाजार की खोज, ग्रामीण क्षेत्रों में

यातायात एवं व्यापार सुविधाओं का विकास आदि, ये सब ऐसी बातें हैं, जिनपर दीनदयाल जी एवं नानाजी देशमुख ने काफी गंभीरता और व्यापकता से विचार कर अपने सुझाव दिये हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत संरचनाओं के विकास, विद्युत, जल, संचार, शिक्षण संस्था, स्वास्थ्य–सुविधा, सतत् एवं समेकित कृषि विकास के संसाधनों आदि के लिए अगर सरकारी प्रयासों को गति प्रदान करना है तो हमें 'ग्रामोदय मेले' जैसे आयोजनों से लाभ उठाना चाहिए, जहाँ विभिन्न विचारक, तत्वचिंतक और नीति–नियामकों के अलावे कृषि और ग्रामीण विकास से जुड़े सभी लोग उपस्थित हैं। मैं इस ग्रामोदय मेले के सफल आयोजन की मंगल कामना करता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि यह आयोजन दीनदयाल जी के जन्म शताब्दी वर्ष में संस्थान की एक अनुपम भावांजलि के रूप में सदैव याद किया जाएगा। आपने इस भव्य आयोजन में मुझे आमंत्रित किया, इसके लिए आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द !!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।